हे मेरो मनमोहना आयो नहीं सखी री

हे मेरो मनमोहना आयो नहीं सखी री ।

कैं कहुं काज किया संतन का ।
कैं कहुं गैल भुलावना ॥

कहा करूं कित जाऊं मेरी सजनी ।
लाग्यो है बिरह सतावना ॥

मीरा दासी दरसण प्यासी ।
हरि-चरणां चित लावना ॥

https://alltvads.com/bhajan/lyrics/id/281/title/he-mero-manmohna-aayo-nahi-sakhi-ri

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |